International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629X, (Print), E- ISSN 2320-5466, Issued- 8,VOL- I August, 2013

शोध पत्र – हिन्दी

अनामिका की कविताओं में अभिव्यक्त स्त्री संवेदना

* उमाटे साईनाथ तुकाराम

* शोधार्थी , हिन्दी विभाग, हैदराबाद केंन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन प्रमुखतः से गद्य साहित्य में हुआ है। हालॉ कि पिछले कुछ वर्षों में इसने आत्मकथा और आलोचना के क्षेत्र में भी तेजी से सृजनातमक लेखन का कार्य किया है । इसके अतिरिक्त जिस सृजात्मक क्षेत्र में स्त्री लेखन का मजबूत स्वर उभरा है– वह कविता है । समकालीन हिंन्द कविता के परिदृश्य पर दृष्टिपात करें तो पुरुष कवियों के साथ–साथ स्त्री कवयित्रियों की भी उपस्थिती लगातर सशक्त होती जा रही है । स्त्री कविताओं ने अपना एक रचना–संसार सृजित किया है । वह आवश्क भी है ।

आज की स्त्री कविताओं की अंतर्वस्तु स्त्री की मानसिकता को अलग–अलग कोण से व्यक्त करनेवाली रही है । इसमें स्त्री के अवसाद से लेकर उसका प्रतिरोध तक अभिव्यक्त हुआ है । किन्तु यह मात्र एक स्त्री की अभिव्यक्ती न होकर एक पूरे समाज की स्त्रियों की रही है। इसलिए आज की स्त्री कविताओं में स्त्री भरी पडी है।

समकालीन कविता के महिला लेखन के परिदृश्य में चर्चित कवयित्री के रुप में अनामिका का नाम महत्त्वपूर्ण हैं । अनामिका उन रचनाकारों में से जो समाज केहर कोने से परिचित है । उनकी कविताओं में स्त्रीवादी स्वर अधिकांश साफ झलकता है, किन्तु पूरे समाज को एक स्त्री के नजरिये से देखने–समझाने की विनम्र कोशिश है –उनकी अधिकांश कविताऍं। अर्थात वह हमेशा इस बृहत्तर समाज की गति एवं विडबनाओं को एक स्त्री की ऑखो देखने–परखने की कोशिश करती हैं । उनकी शफर्नीचरश शीर्षक कविता एक भारतीय स्त्री के जीवन और उसके पारंपारिक रिश्तों के खोखलेपन को जाहिर करती है।

t।l।

मै उनको रोज झाडती हूँ
पर वे ही हैं इस पूरे घर में
जो मुझको कभी नहीं झाडते !
रात को जब सब सो जाते हैं–
अपने इन बरफाते पावों पर
आयोडिन मलती हुई सोचती हूँ मैं
किसी जनम में मेरे प्रेमी रहे होंगे फर्नीचर,
कहुआ गये होंगे किसी शाप से ये !
मैं झाडने के बहाने जो छूती हूँ इनको,
ऑसुओं से या पसीने से लतपथ ।1

समकालीन दौर में अनामिका की स्त्री कविता ने सामाजिक अन्याय के विरुध्द, असांस्कृतिक कार्रवाईयों के विरुध्द समय–समय पर जो सार्थक भूमिकाऍं अदा की है वह उनकी स्त्री कविता का बल है। स्त्री मन को जानने में अनामिका की कविताऍं दूर तक साथ देती हैं।

उनकी स्त्री संवेदना चर्चा में रहने के लिए नहीं बल्कि वह उस आधी आबादी की संवदेना है, आधी आबादी की जुबां है, जो जादु की तरह छा जाती है । श्खोए पत्तेश शीर्षक कविता में कवयित्रि कहती है –

बुध्दिमती थीं सीता ।
शोक के महाकाश से सोना बरसाकर
राम को दिखाया था रास्ता !
सिध्द किया था अपने ढंग से
लापता लोग नहीं होते
पूरी तरह लापता !²

समकालीन हिंदी काव्य– जगत के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह कहते हैं – ''स्त्री रचनाकारों में खास तौर से नारीवादी लेखन में इधर जो प्रवृत्तियॉ दिखाई पडती हैं, अनामिका का काव्य–व्यवहार उनसे थोडा अलग है । वे इस क्षेत्र में एक अधिक संग्रहथित दृष्टिकोण की हामी दिखाती है, जिसमें जीवन के विधेयात्मक तत्वों की स्वीकृति का अर्थ ज्यादा मूल्यवान है । उनकी कविताओं कों ध्यानसे देखा जाए तो वहॉ कुछ चीजों का स्वीकार और कुछ चीजोंका एक यातना भरा निषेध – ये दोनों एक साथ दिखाई पडेंगी । विधि और निषेध का यह द्वंद्व न्याय उनके काव्य की शांत–सी दिखने वाली सतह के नीचे एक अदृश्य हलचल की तरह हमेशा मौजूद रहता है।[3]

अर्थात समकालीन स्त्री लेखन में अनामिका ने स्त्री कविता को फलक को को विस्तृत किया है, उसकी धार को तीक्ष्ण बनाया है । और उसके स्वर को संघर्षपूर्ण भी बनाया है । मसलन उन्होने श्दादीश शीर्षक कविता के बहाने उस पुरानी पीढी की स्त्री की आस्था के प्रश्न को बहुत गहराई में

उकेरा हैं । जैसे

पूजाघर था –
दादी का कोपभवन,
बैंक, डाकघर,
गुडियाघर, मंच और दतरा !
अपना कोना– एक बूँद–भर !
काउन्सेलिंग सेल ! रॉयल चैम्बर ।
पूजाघर, गुडियाघर, पूजाघर ! [4]

इस प्रकार स्त्री जगत के इतने सच्चे और टटके अनुभव कम ही कवयित्रियों में मिलते है जितने अनामिका के यहॉ । उनकी कविताओं का अपना एक स्वर है । अपनी कविताओं के माध्यम से पाठक वर्ग के सामने एक जीवंत दृश्य पेश करने में अनामिका सफल रही है । उनकी स्त्री कविता बहुत सजग होकर इस पूरे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, धार्मिक ढॉचे की पहचान करती है जिसने स्त्री को एक अस्मिता–विहिन जैविक इकाई के रुप में सदियों से रखा हैA t।।

जैसे जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून
अन्वय करते थे किसी के श्लोक का ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर /
और मारे डरके जम जाती थीं
हम लडकियॉ
अपनी जगह पर ![5]

यह हमारे समाज के त्रासद मूल्यों का परिणाम है जिसमें स्त्री की स्थिताि सिर्फ दयनीय है । उक्त पंक्तियॉ अनामिका की अत्यंत सूक्ष्म कवि दृष्टी का परिचय देने के लिए पर्याप्त है । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह कहते है कि, 'वे प्रायः गद्य की जमीन से शब्दों को उठाती हैं और उन्हे कथन की उसी भंगिमा के साथ तह पर तह जमाती जाती हैं । इसीलिए उनकी भाषा और कविता का पूरा मिजाज प्रचलित काव्यभाषा से थोडा अलग है। वे अपने परिवेश से बाहर प्रायः नहीं जाती लेकिन उस परिवेश में वाश–बेसिन से लेकर मंगल सनीचर और चौराहे पर अचानक मिल जानेवाले ईश्वर तक सब शामिल हैं ।[6]

अनामिका का रचना संसार आज के समय एवं समाज की विडबनाओ को अभिव्यक्त करता है । उनकी स्त्री कविता उपभोक्तावादी समाज में जो स्त्री को एक उपभोक की वस्तु के रुप में देखने वाले पुरुषवादी समाज पर प्रहार करती हुई दिखाई देती है । ''चौदह बरस की कुछ सेक्स वर्कर्स''में कवयित्री कहती है –

अंकल, तुम भारी बहुत हो !
अच्छा, एक चॉकलेट खिला दो !
अंकल, तुम्हारे भी बेटी है ?
अच्छा बोलो उसका क्या नाम ?
वह भी मेरे –जैसी मजेदार है क्या – बोलो तो ![7]

अर्थात अनामिका की कविताओं में स्त्री अनेक रुपों मे प्रस्तुत हुई है। कठिनाई से संघर्ष करती स्त्री की जिंदगी, मनोदशा तथा उसके संपूर्ण जीवन का चित्रण उनकी कविताओं मे दृश्यमान हैं। उत्तर आधुनिक समय एवं समाज में स्त्रियों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड रहा है । लिहाजा अनामिका की कविता अपनी जनपदीय संस्कृति से ऊर्जा प्राप्त करके भी भारतीय पितृसत्तात्मक समाज के विरुध्द संवदेनात्मक प्रतिरोध दर्ज करने के लिए पुराने और नितनये उपमेय और उपमान तलाशती है। एक जमाने में स्त्री के प्रति समाज में श्रध्दा का मुकूट, श्रेष्ठ कहे जाने वाले लोग थे किन्तु उसी स्त्री के साथ आज किस तरह का बर्ताव किया जा रहा है इसका ज्वलंत प्रमाण कवयित्री की निम्म पंक्तियों में देखा जा सकता हैं।

भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुख की तरह !
एक दिन हमने कहा
हम भी इन्सान है–
हमें कायदे से पढो एक–एक अक्षर
जैसे पढा होगा बीए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन ![8]

इन पंक्तियों से जाहिर होता है कि अनामिका की स्त्री कविताओं मे स्त्री की कोमल, सूक्ष्म संवदेनाओं को अभिव्यक्त किया है । कवयित्री अपने श्पानी जो पत्थर पीता हैश शीर्षक पुस्तक में लिखती है ''स्त्री की देह युग–युगांतर से उसके शोषण का साइट रही है –मार–पीट, घसीटा–घसीटी, गाली–गलौज, नोच–खसोट, भावहीन, यांत्रिक संभोग–विवाह के भीतर या उसके बाहर का सूक्ष्म या स्थूल यौन शोषण कभी रिश्तेदार, कभी गॉडफॉदर के रुप में कभी सहकर्मी या अन्य हितैषी रुपों में भी । इसलिए देह के प्रश्न पर हर स्त्री सशंक रहती है ।''[9]

अनामिका की स्त्री कविता, स्त्री के प्रति यह जो नजरिया है, उसे बदलने और स्त्री शक्ति को उजागर करने की कोशिश करती है । मसलन

एक चीख मेरे भीतर भी दबी है !

उसका बस चले अगर तो
मेरी पसलियॉ तोडती
निकल आए बाहर !
ये चीख मेरी
आदिवासी रुपसी की तरह
अब तक किले के तहखाने में
टहल रही है बेबस ।
जंजीरें छूमछनन उसके पैरों की
जिस दिन भी टूटेंगी – देखना
बिन घूंघरु नाच उठेगा जंगल ![10]

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि, समकालीन कविता के कवि एवं कवयित्रियों के बीच अनामिका का नाम एक संवेदनशील तथा सामाजिक यथार्थ की कवयित्री के रुप में है । उनकी कविताएँ स्त्री की कोमल एवं सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को समग्रता से समझने की एक ईमानदार कोशिश है ।

उन्हाने अपनी कवितों ओं मे अपनापन अर्जित कर लिया है। उनकी कविताओं का मुख्य स्वर स्त्री संवदेना ही रही है । स्त्री की जिंदगी को उन्होने बडे मार्मिक बिंबो एवं प्रतिकों के व्दारा प्रस्तुत किया है । साथ ही व्यंगपूर्ण भाषा का प्रयोग भी उन्होने किया है ।

संदर्भ ग्रंथ

1) अनामिका – खुरदुरी हथेलियॉ पृ.सं. 19.
2) अनामिका – अनुष्टुप पृ.सं. 24.
3) वागर्थ– मार्च 1998 पृ. सं. 52.
4) अनामिका – अनुष्टुप पृ.सं. 63
5) अनामिका – खुरदुरी हथेलियॉ पृ.सं. 15.
6) वागर्थ– मार्च 1998 पृ. सं. 52
7) अनामिका – दुब–दान पृ.सं. 69,70.
8) अनामिका – खुरदुरी हथेलियॉ पृ.सं. 13.
9) अनामिका – पानी जो पत्थर पीता है पृ.सं. 105.
10) अनामिका – खुरदुरी हथेलियॉ पृ.सं. 43.